सच्चा दान

[महाभारत की एक अर्थपूर्ण मार्मिक कथा]

सन्तराम वत्स्य

सच्चा दान

[महाभारत की एक अर्थपूर्ण मार्मिक कथा]

*

लेखक

सन्तराम वत्स्य

चित्रकार

आनन्द

*

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३ दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२
द्वारा प्रकाशित/संस्करण १९८९/ **मूल्य: ६.००**

महाराज ! आप तो अनेक युगों की बातें जानते हैं।

हमारे यहाँ जैसा यज्ञ हुआ, वैसा क्या पहले भी किसी ने किया है ?

भीमसेन ने श्रीकृष्ण से पूछा।

महाराज युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ उस दिन पूरा हुआ था।

भगवान् वेदव्यास, श्रीकृष्ण और पाँचों पाण्डव राजमहल के आंगन में खड़े थे।

श्रीकृष्ण ने भगवान् वेदव्यास की ओर देखा।
दोनों मन ही मन मुस्कराए।
भीम का अभिमान, उनसे छिपा न रहा।

इतने में देखते क्या हैं कि—
सामने पड़ी जूठी पत्तलों में एक नेवला
अपना बदन घिस रहा है।
उस नेवले का आधा शरीर सोने की तरह
चमक रहा था।
और आधा मटमैले रंग का था।
ऐसा नेवला तो कभी किसी ने नहीं देखा था।

व्यास भगवान् बोलेः—

लो, अभी इसकी जांच करते हैं।

उन्होंने अपने कमण्डल से पानी लिया और मंत्र पढ़कर नेवले पर छिड़क दिया।

पानी छिड़कने भर की देर थी कि नेवला आदमी जैसी बोली बोलने लगा—
झूठा है, झूठा है, युधिष्ठिर का यह यज्ञ झूठा है।
सच्चा यज्ञ, सच्चा दान तो उस ब्राह्मण का ही था।

इस बात पर सभी को अचरज हुआ।
सबके कान खड़े होगए।
युधिष्ठिर महाराज कुछ खिसिया गए।
श्रीकृष्ण ने पूछा—
क्या बात है ?
बात क्या है ?
तुम कह क्या रहे हो, कौन ब्राह्मण था वह ?
क्या दान किया था उसने ?
इस यज्ञ को झूठा क्यों कहते हो ?

नेवले ने कहा—
अजी, आपसे कुछ छिपा थोड़े ही है।
आप और व्यासजी तो तीन लोक की
बातें जानते हैं।
फिर भी मेरी बात सुन लीजिए।
फिर सोचिए कि मैं ठीक कहता हूँ या नहीं।
व्यास जी ने कहा—
अच्छी बात है।
बोल भाई, तुझे क्या कहना है।
हम सब सुन रहे हैं।

तो सुनिए—बहुत देर की बात नहीं है,
कई साल लगातार वर्षा नहीं हुई।
फिर अन्न कैसे होता ?
देश भर में अकाल पड़ गया।
लोग भूखों मरने लगे।
चारों ओर हाहाकार मच गया।

उन्हीं दिनों की बात है।

तपोवन में एक ब्राह्मण-परिवार रहता था–

ब्राह्मण, ब्राह्मणी, उसका पुत्र और पुत्र-वधू।

ब्राह्मण क्या था, देवता था

बड़ा ज्ञानी, बड़ा भक्त, बड़ा तपस्वी।

दिनभर पूजा-पाठ में लगा रहता।

घर के दूसरे लोग भी वैसे ही थे।

एक दिन की बात है।
सारा परिवार कई दिनों से भूखा था।
ऐसे बुरे समय में कोई दान-दक्षिणा भी न देता था।
फिर ब्राह्मण ऐसा था कि किसी के आगे हाथ न पसारता।
ब्राह्मण का लड़का कहीं से सेर भर जौ ले आया।
सास-बहू ने बीन-चुनकर साफ किए।
कूट-पीसकर सत्तू बनाए।
दोपहर हुई तो बराबर के चार हिस्से किए।
चारों जने खाने बैठे।

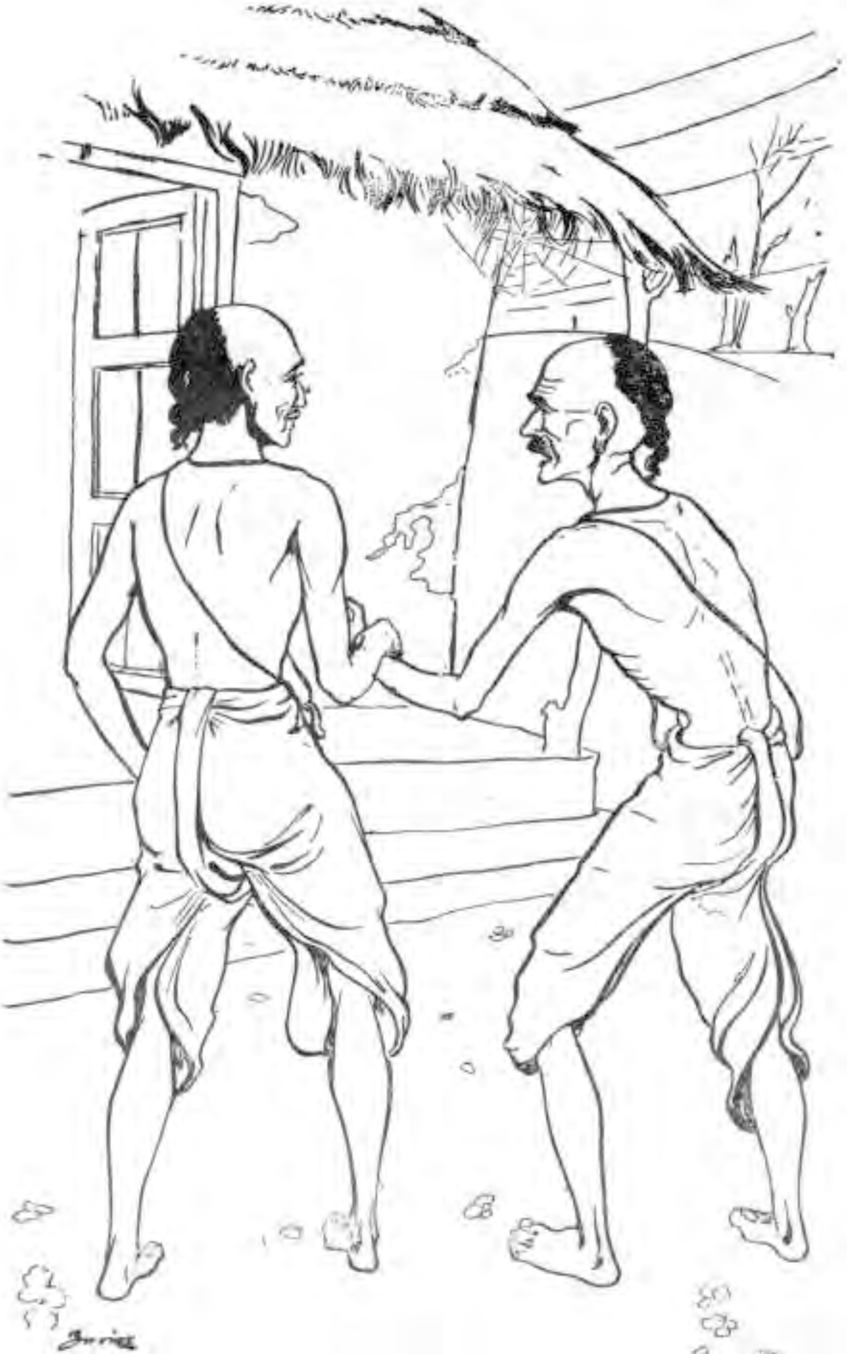

इतने में बाहर से आवाज़ आई—

हरि नारायण ! हरि नारायण !! हरि नारायण !!!

ब्राह्मण तुरन्त पत्तल छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

द्वार पर जाकर बोला—

महाराज पधारिए।

द्वार पर अस्सी वर्ष का एक बूढ़ा खड़ा था।

हाथ की लाठी थरथर काँप रही थी।

पेट पीठ से चिपका हुआ था।

ब्राह्मण बूढ़े अतिथि को हाथ का सहारा देकर भीतर ले गया और आसन पर बिठाया।

ब्राह्मण ने दोनों हाथ जोड़कर पूछा—
महाराज ! क्या आज्ञा है ?
भूखा हूँ भाई,
कई दिनों से अन्न का एक दाना पेट में नहीं गया है।
कुछ हो तो लाओ।
ब्राह्मण ने कहा—
महाराज ! भोजन तैयार है।
चौके में चलिए।
अब मैं एक डग भी नहीं चल सकता।
जो हो, यहीं ले आओ।
बूढ़े ने लाठी एक ओर रखते हुए कहा।

ब्राह्मण के पुत्र ने बूढ़े के हाथ-पैर धुलाए।
चारों अपनी-अपनी पत्तल उठाने लगे।
पर, ब्राह्मण ने सबसे पहले अपनी पत्तल
उठाकर बूढ़े के आगे रख दी।
बूढ़े ने बात की बात में पत्तल खाली करदी।
महाराज और मंगवाऊँ? ब्राह्मण ने पूछा।
अभी भूख तो है। कुछ हो तो लाओ।
लड़का झट अपनी पत्तल उठा लाया।
बूढ़ा उसे भी चट कर गया।
महाराज, इच्छा हो तो और लाऊँ?
है तो ले ही आओ।
तीसरी पत्तल आई और फिर चौथी।
बूढ़ा खा-पीकर उठ खड़ा हुआ।

अतिथि आशीर्वाद देकर चलता बना।
ब्राह्मण की पुत्र-वधू ने जूठी पत्तल उठाकर बाहर फेंकी।
मैं भी घूमता-फिरता वहाँ जा निकला।
पत्तल मेरे शरीर से छू गई।
जहाँ-जहाँ वह लगी, उतना-उतना मेरा शरीर सोने का हो गया।
तब से जहाँ कहीं यज्ञ होता है, मैं जा पहुँचता हूँ।
जूठी पत्तलों से अपने शरीर को छुआता हूँ।
लेकिन आज तक मेरा एक भी रोआँ सुनहला नहीं बना।
मैं यहाँ भी बड़ी आश लगाकर आया था, पर पल्ले कुछ न पड़ा।

हाँ, तो दूसरे दिन पास-पड़ौस वालों ने देखा कि ब्राह्मण परिवार के चारों जीव मरे पड़े हैं।

ऐसा था वह ब्राह्मण !

और ऐसा था उसका दान !!

इसलिए मैं कहता हूँ कि यह यज्ञ झूठा है, बेकार है।

सच्चा यज्ञ, सच्चा दान तो उस ब्राह्मण का ही था।

★